2026 Volume: 02 Issue: 03 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-09

भारतवर्ष में जैविक खेती का अध्ययन

***Mr. Pushp Raj Gunjan**

Assistant Professor, Teachers' Training College, Bhagalpur, Affiliated to Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur, City- Bhagalpur, State-Bihar, Country- India.

Article Received: 1 February 2026
Article Revised: 21 February 2026
Published on: 14 March 2026

***Corresponding Author: Mr. Pushp Raj Gunjan**
Assistant Professor, Teachers' Training College, Bhagalpur, Affiliated to Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur, City- Bhagalpur, State-Bihar, Country- India.

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.7631

ABSTRACT

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है। भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी कृषि है। आजादी के बाद हरित क्रांति के कारण भारत ने खाध उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दिशा में हमारे किसानों के द्वारा रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशी का भारी मात्रा में प्रयोग किया गया। परिणाम के रूप में प्रदूषित जल , बंजर भूमि तथा असाध्य बीमारी प्राप्त किया है। यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ा संकट है। इस संकट से बाहर निकलने का रास्ता केवल जैविक खेती है। जैविक खेती इस संकट पूर्ण स्थिति में एक आशा की किरण बनकर उभरी है। जैविक खेती कृषि की ऐसी विधि है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग के स्थान पर वर्मी कम्पोस्ट जैसी प्राकृतिक संसाधनो उपयोग करके भूमि की उर्वरता को बरकरार रखी जाती है। जैविक खेती करने से पर्यावरण की रक्षा के साथ मानव स्वास्थ्य की भी रक्षा होती है। परन्तु किसानों को जैविक खेती की तरफ अग्रसर करना एक चुनौती पूर्ण कार्य है। सरकारी संगठन और गैर- सरकारी संगठनों के द्वारा वृहत् स्तर किसानों को जैविक खेती करने के कौशलों को सिखाया जा रहा है। किसानों को विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से खेती में उपयोग की जाने वाली अणु जल, जीवाणु जल, भस्म रसायन,ट्राईको डारमा तथा फलों, सब्जियों में छिड़काव की जाने वाली रसायनों को बनाने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। नवधान्य, सेन्टर फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर, मोरारका फॉउन्डेशन, वाटर आगनाइजेशन ट्रस्ट, बायफ डेवलपमेन्ट रिसर्च फाउंडेशन जैसे गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा. जैविक खेती के विभिन्न आयामो पर किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है।

कूटशब्द : हरित क्रांति ,खाध उत्पादन , नवधान्य,अणु जल, जीवाणु जल

परिचय

जैविक खेती के मुख्य आधारभूत स्तम्भ :-

1. प्राकृतिक खाद : - मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए तथा अधिक से अधिक पैदावार के लिए जमीन का पोषण आवश्यक है इसके लिए गोबर की खाद से बनी कम्पोस्ट, केंचुआ खाद और हरी खाद के रूप में जलकुंभी का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है।

2. जैविक कीटनाशक :- इसमें विभिन्न प्रकार के कीड़ों से फसलों, सब्जियों को बचाव के लिए नीम का तेल, दशपर्णी अर्क या गौमूत्र जैसे प्राकृतिक घोलों का उपयोग होता है।

3. फसल चक्र :- जैविक खेती का मुख्य आधार स्तम्भ के रूप में .फसल चक्र पर का अमूल्य योगदान है। फसल चक्र के तहत एक खेत में एक ही फसल बार-बार न उपजा कर बदल-बदल कर फसलों का पैदावार करना फसल चक्र कहलाता है तथा इस प्रक्रिया में मिट्टी के पोषक तत्व बना रहता है।

4. मिश्रित खेती :- एक साथ जमीन में दो या दो से अधिक फसलों को उपजाना ही मिश्रित खेती कहलाता है। इससे जमीन का बेहतर उपयोग होता है तथा कीटों का प्रभाव भी कम होता है।

जैविक खेती के लाभ:

1. शून्य लागत - यह खेती कम लागत पर आधारित होती है। किसानों को महंगे बीज और कीटनाशक रसायनों से मुक्ति मिल जाती है इसके स्थान पर घर पर ही खाद और कीटनाशी, पीङकनाशी को तैयार कर लेते हैं इससे हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

2. पर्यावरण संरक्षण :- इस खेती के द्वारा पर्यावरण संरक्षण होता है तथा भूमि, जल, वायु प्रदूषण नहीं होता है।

3. बेहतर स्वास्थ्य: जैविक खेती से प्राप्त खाद्य उत्पादन से कोई बीमारी नहीं होती है जिसमें आम नागरिकों का स्वास्थ्य बेहतर रहता है। निरोगी काया को पहला सुख कहा गया है।

4. बेहतर पोषण:- वैज्ञानिकों के द्वारा किए आए अनुसंधान से पता चला है कि जैविक उत्पादों में अधिक vitamin, minerals और एंटीऑक्सीडेंट की मात्रा सामान्य कृषि उत्पाद की तुलना में पायी गयी है। खेती प्राप्त कोई भी खाथ उत्पाद taste और सुगंधित होती है।

5.मिट्टी की उर्वरा शक्ति को उच्च :- जैविक खेती में गोबर की खाद तथा वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग किया जाता है जिसके कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति लंबे समय तक बनी रहती है।

6.विभिन्न प्रदषणों में कमी :- जैविक खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है जिसके कारण विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों में कमी होती है।

7. बाजार में अधिक मांग - वर्तमान समय में आमजन स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं जिससे बाजार में जैविक खेती उत्पादों की मांग बढ़ रही है।

जैविक खेती के प्रकार

1. शुद्ध जैविक खेती
2. एकीकृत जैविक खेती
3. शून्य बजट प्राकृतिक खेती
4. वर्मी कम्पोस्टिंग

1. शुद्ध जैविक खेती --- यह जैविक खेती का प्राकृतिक प्रकार है। इस प्रकार की खेती में किसी भी प्रकार का कोई भी रासायनिक खाद , डी० A पी०, का प्रयोग नहीं होता है। इसमें रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं करना प्राकृतिक के साथ संतुलन स्थापित करना है। गोबर का खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु जल, भस्म रसायन, ट्राईकोडारमा का प्रयोग किया जाता है।

2. एकीकृत जैविक खेती :- इस प्रकार की जैविक खेती में खेती के साथ-साथ अन्य गतिविधि जैसे- पशुपालन, मुर्गी पालन के साथ मछली पालन किया जाता है जिससे कि एक का अपशिष्ट दूसरे के लिए संसाधन बन जाता है। मवेशी का गोबर खाद के रूप में प्रयोग उदाहरण के लिए — किया जाता है एवं फसलों का अवशेष जैसे - डंठल, भूसा पशुओं का खाना बन जाता है।

3. शून्य बजट प्राकृतिक खेती : इसमें गाय का मूत्र, गोवर, गुड़ और बेसन का मिश्रण का प्रयोग किया जाता है।

4- वर्मी कम्पोस्टिंग- इसमें मिट्टी की संरचना में सुधार के लिए केंचुआ का प्रयोग किया जाता है केंचुआ को किसानों का मित्र कहा जाता है।

जैविक खेती के अध्ययन के उद्देश्य

1. स्वास्थ्य सुरक्षा - आधुनिक अनुसंधान के द्वारा पता चला है कि खेती में रासायनिक खाद तथा विभिन्न रसायनों के प्रयोग से उत्पादित अनाजों में जहरीले तत्व मौजूद रहते हैं ये जहरीले तत्व मानव स्वास्थ्य को गंभीर रूप से हानि पहुंचाते हैं तरह-तरह की बीमारियों को जन्म देते हैं। इन बीमारी से बचाव के एकमात्र सहायक उपाय जैविक खेती है। जैविक खेती के अध्ययन के बाद ही हम जैविक खेती को करने के तरीके को समझ सकते हैं तथा अपना स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं।

2. मिट्टी की उर्वरता शक्ति को उच्च बनाना - जैविक खेती से मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। रासायनिक खादों तथा रसायनों को खेत में डालने से जमीन बंजर हो जाती है इतना ही नहीं मिट्टी के मित्र कीट (केंचुए) खत्म होने के कारण जमीन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

3. नाईट्रोजन की स्थिरता :- जैविक खेती में हरी खाद जैसे (मूंग, मसूर, तना का पता और डंठल) का प्रयोग किया जाता है जिससे जमीन में नाईट्रोजन की स्थिरता बनी रहती है तथा मिट्टी उपजाऊ बनी रहती है।

4. खेती में कम खर्च लगना :- जैविक खेती को शून्य लागत खेती भी कहा जाता है इसमें महंगे कीटनाशकों और खाद प्रयोग नहीं किया जाता है। कम खर्च लगता है।

5. बेहतर बाजार तथा निर्यात: संपूर्ण विश्व में जैविक उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई है जिससे जैविक उत्पादों को बेहतर बाजार मिलता है तथा उत्पादों को अच्छा दाम मिलता है। लोग महंगे दामों पर भी शुद्ध भोजन खरीदने को तैयार है।

6. विषमुक्त भोजन :- जैविक उत्पाद से तैयार भोजन विषमुक्त होता है तथा इससे कैंसर और अन्य गंभीर व्याधियों से छुटकारा मिल जाता है।

7. सतत कृषि :- जैविक खेती के द्वारा आने वाली संततियों के लिए खेती योग्य जमीन को सुरक्षित रखा जाता है क्योंकि एक तरफ जहाँ रासायनिक खादों के प्रयोग से खेती बंजर एवं अनुपजाऊ हो जाती है वहीं पर जैविक खेती से खेत लंबे समय तक उत्पादन देने की क्षमता रखती है।

8. " मिटटी बचाओ, स्वास्थ्य क्चाओं, और पर्यावरण बचाओं" ------ जैविक खेती मिट्टी बचाओ, स्वास्थ्य बचाओ और पर्यावरण बचाओं के सिद्धान्त पर आधारित है।

भारत में जैविक खेती का राज्यवार क्षेत्रफल (शीर्ष राज्य)

नीचे वर्ष 2023-24 और 2024-25 के नवीनतम आंकड़ों के आधार पर प्रमुख राज्यों की स्थिति दी गई है:

क्रम	राज्य	क्षेत्रफल (लगभग हेक्टेयर में)	विशेषता
1	मध्य प्रदेश	~16,21,900	भारत का सबसे बड़ा जैविक क्षेत्र (कुल का ~27%)
2	महाराष्ट्र	~13,28,200	सोयाबीन और कपास के लिए प्रसिद्ध
3	गुजरात	~9,55,750	मूंगफली और तिल के क्षेत्र में अग्रणी
4	राजस्थान	~7,02,860	दलहन और औषधीय पौधों की खेती
5	ओडिशा	~2,48,715	जनजातीय क्षेत्रों में प्राकृतिक खेती पर जोर
6	कर्नाटक	~1,50,000+	कॉफी और मोटे अनाज (Millets)
7	सिक्किम	~75,000	भारत का पहला 100% जैविक राज्य
8	उत्तराखंड	~1,00,000	पहाड़ी मसालों और फलों के लिए

महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर्दृष्टि (2024-25 के अनुसार)

कुल प्रमाणित क्षेत्र: भारत में लगभग **45 लाख हेक्टेयर** कृषि भूमि और **28 लाख हेक्टेयर** जंगली क्षेत्र (Wild Harvest) जैविक रूप से प्रमाणित है।

शीर्ष तीन राज्य: मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात मिलकर भारत के कुल जैविक क्षेत्रफल का **50% से अधिक** हिस्सा कवर करते हैं।

पूर्वोत्तर भारत: सिक्किम के बाद मेघालय, मिजोरम और उत्तराखंड जैसे राज्य अपने शुद्ध बोए गए क्षेत्र (Net Sown Area) के 10% से अधिक हिस्से पर जैविक खेती कर रहे हैं।

नोट: ये आंकड़े समय-समय पर अपडेट होते रहते हैं क्योंकि नए किसान 'इन-कन्वर्जन' (जैविक खेती की ओर संक्रमण) की प्रक्रिया में जुड़ते रहते हैं।

जैविक खेती को प्रोत्साहित करने में सरकारी संगठनों **की भूमिका**

1. परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY): - यह सरकार की जैविक खेती के क्षेत्र में सबसे प्रमुख प्रयास है इसके अंतर्गत ग्रामीण इलाकों में कलस्टर आधारित जैविक कृषकों को बढ़ावा देने का काम किया जाता है। जैविक कृषकों को प्रति हेक्टेयर की 36 महीने की अवधि के लिए 50,000/- रूपये की प्रोत्साहन राशि देने का प्रावधान है। इस 50,000/-की राशि में खाद, बीज के लिए 31,000/- रुपये दिया जाता है।

2. MOVCINER - MISSION ORGANIC VALUE CHAIN DEVELOPMENT FOR NORTH EASTERN REGION - यह भारत के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू की गयी एक केन्द्रीय क्षेत्र योजना है जिसका मुख्य लक्ष्य उत्तरी पूर्वी क्षेत्र के आठ राज्यों (अरुणाचल प्रदेश असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा) में व्यावसायिक जैविक खेती को बढ़ावा देना, संपूर्ण मूल्य-श्रृंखला (उत्पादन से लेकर बाजार तक) विकसित करना और किसानों की आय बढ़ाना है।

3. राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (NMNF) - राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन केन्द्र सरकार स्तर की एक महत्त्वपूर्ण योजना है जिसकी शुरुआत 2024 ई० में की गयी थी। इसका मुख्य लक्ष्य रासायनिक खेती क्रम बद्ध तरीके से समाप्त करके जैविक आधारित खेती की प्रोत्साहित करता है। इस मिशन को सफलता दिलाने हेतु 15 वें वित्त आयोग की अवधि (2025-26 ई०) तक कुल 2,481 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। इसमें अगले दो बर्ष की अवधि में 1 करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती करने के लिए जोड़ा जाएगा। संपूर्ण भारत में 7.5 लाख हेक्टेयर में खेती शुरू की जाएगी। संपूर्ण देश में लगभग 30,000 कृषि सखियों को किसानों के मार्गदर्शन के लिए तैयार किया जाएगा।

4. राष्ट्रीय जैविक और प्राकृतिक खेती केन्द्र (NCONF) --- यह गाजियाबाद में स्थित है तथा एक प्रकार का नोडल एजेन्सी है जो जैविक खेती की नई विधियों पर प्रशिक्षण और दिशा-निर्देश जारी करता है।

5. जैविक खेती पोर्टल- यह एक ई-कॉमर्स पोर्टल है इसके द्वारा सीधे ग्राहकों को अपना जैविक उत्पाद बेच सकते हैं।

6. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय - राष्ट्रीय स्तर पर योजनाओं को निर्माण और फंड जारी करने का कार्य करती है।

7. APEDA - जैविक उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने तथा मानकों की निगरानी करने का काम करते हैं।

8. NCONF - जैविक उर्वरकों का मानक तय करने से लेकर प्रशिक्षण हेने तक का कार्य करती है।

9. ICAR - जैविक खेती के लिए उन्नत बीज और वैज्ञानिक शोध का काम करती है। क्रम बद्ध तरीके से रासायनिक खेती समाप्त करके जैविक आधारित खेती की प्रोत्साहित करता है।

जैविक खेती को प्रोत्साहित करने में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

1. नवधान्य (Navdanya) - गैर सरकारी संगठनों में सबसे अग्रणी माना जाने वाला संगठन है। इसकी स्थापना डॉ॰ वंदना शिवा के द्वारा किया गया था। इनरे द्वारा संपूर्ण भारतवर्ष में हाईब्रिड बीजों के जाल से किसानों को बचाने के लिए 150 से अधिक सामुदायिक बीज बैंक स्थापित किए गए हैं। इनके उत्तराखंड के देहरादून में स्थित बीजा विद्यापीठ" में किसानों को प्रशिक्षित किया जाता है।

2.Community Supported Agriculture (CSA) -------उनके द्वारा आन्ध्रप्रदेश और तेलंगाना में 'Non - Pesticide Management' NPM मोडल को सफलतापूर्वक लागू किया गया है।

3. वाटरशेड ऑर्गनाइजेशन ट्रस्ट (WOTR) - इस संस्था के द्वारा मिट्टी की उर्वरता को बचाने के लिए सिखाया जाता है साथ ही साथ कीट नियंत्रण करने के प्राकृतिक उपायों को सिखाया जाता है। इसके द्वारा किसानों को मोबाइल द्वारा सलाह दी जाती है। इनका मुख्य कार्य जल संरक्षण है, लेकिन ये जैविक खेती को जलवायु परिवर्तन से लड़ने के हथियार के रूप में उपयोग करते हैं।

4. बायफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन (BAIF)

वाडी मॉडल (Wadi Model): इन्होंने आदिवासी क्षेत्रों में फलदार वृक्षों के साथ जैविक खेती को जोड़कर 'वाडी' (छोटा बगीचा) विकसित किया है। ये गोबर और कृषि अपशिष्ट से उच्च गुणवत्ता वाली खाद बनाने के लिए किसानों को प्रशिक्षित करते हैं।

सुझाव

1 जैविक खेती की प्रतिशतता को बढ़ाने के लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।

2. सभी सार्वजनिक जगहों पर, दिवालों पर, चौराहों पर जैविक खेती से संबंधित सलोगनों को लिखवाया जाना चाहिए।

3. विद्यालयों एवं महाविद्यालयों, पंचायत भवनों, अंचल कार्यालयों, समाहारणालयों, कृषि भवनों, कृषि केन्द्रों में भी जैविक खेती से संबंधित हेल्पलाइन नम्बर (033-2340-0020, 033-2340-0021) लिखा जाना चाहिए।

4. माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में जैविक खेती प्रकरण को शामिल किया जाना चाहिए।

5. विधालयों के द्वारा अनिवार्य रूप से शिक्षकों के निर्देशन में छात्रों के द्वारा अपने अपने पोषक क्षेत्रों में जैविक खेती जागरूकता अभियान के रैली का आयोजन किया जाना चाहिए।

6. जैविक खेती के लिए किसानों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जिससे किसान आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सके।

7. सरकार के द्वारा करने जैविक खेती के लिए गैर सरकारी संगठनों को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

8. जैविक खेती पोर्टल से समय समय पर किसानों को अद्यतन जानकारी दी जानी चाहिए।

9. संपूर्ण भारतवर्ष के अंतर्गत शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के प्रत्येक वार्ड में जैविक खेती की अद्यतन जानकारी हेतु कार्यालय या संस्था खोला जाना चाहिए।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जैविक खेती की भूमिका मानव स्वास्थ्य के लिए वरदान के रूप में है। सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों के द्वारा इसके विकास के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से एवं नुक्कड़ नाटकों के आयोजन द्वारा जैविक खेती के लिए जागरूकता फैलाया जाता है। इसमें हरी खादों, जीवामृत और पंचगव्य, कीट प्रबंधन का प्रयोग किया जाता है। जैविक खेती शून्य बजट खेती होती है। जैविक खेती मिट्टी बचाओ, स्वास्थ्य बचाओ और पर्यावरण बचाओं के सिद्धान्त पर आधारित है।

REFERENCES

1. पांडे, जी. (2020). *जैविक खेती: सिद्धांत और तकनीक*। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन। (यह पुस्तक जैविक खाद, कीटनाशक और फसल चक्र के वैज्ञानिक पहलुओं पर आधारित है)।
2. शर्मा, ए. के. (2018). *जैविक खेती की मार्गदर्शिका*। जोधपुर: एग्रोबायोस इंडिया। (यह मिट्टी के स्वास्थ्य और सूक्ष्मजीवों पर केंद्रित है)।
3. सिंह, आर. पी. (2021). *टिकाऊ कृषि और जैविक प्रबंधन*। वाराणसी: कल्याण प्रकाशन।

4. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (2024). *भारत में जैविक कृषि की स्थिति: वार्षिक रिपोर्ट 2023-24*। भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. APEDA (2025). *जैविक उत्पादों का निर्यात और वैश्विक बाजार विश्लेषण*। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण।
6. FIBL और IFOAM (2025). *द वर्ल्ड ऑफ ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर 2025: आंकड़े और उभरते रुझान*। (यह वैश्विक डेटा के लिए सबसे प्रामाणिक स्रोत है)।
7. कुमार, एस., एवं अन्य (2022). "पारंपरिक बनाम जैविक खेती: एक तुलनात्मक आर्थिक अध्ययन"। *भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका*।
8. यादव, जे. पी. (2023). "जलवायु परिवर्तन के युग में जैविक खेती की प्रासंगिकता"। *पर्यावरण और कृषि जर्नल*।
9. Howard, Albert (1940). *An Agricultural Testament.* Oxford University Press. (इन्हें आधुनिक जैविक खेती का जनक माना जाता है)।
10. Fukuoka, Masanobu (1975). *The One-Straw Revolution.* Rodale Press. (हिंदी अनुवाद: "एक तिनके से आई क्रांति")।
11. Sharma, Arun K. (2022). *A Handbook of Organic Farming.* Agrobios India.
12. Pathak, R.K. & Ram, R.A. (2014). *Organic Farming (Hindi Edition).* ICAR-Central Institute for Subtropical Horticulture.
13. Thapa, U., Tripathy, P., & Somani, L.L. (2020). *Organic Farming in India: Problems and Prospects.* Agrotech Publishing Academy.
14. Chitori, Vijay (2018). *Jaivik Kheti (Sajeev Kheti).* Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi.
15. APEDA (2022). *Organic Products Statistics.* Ministry of Commerce & Industry, Government of India.
16. NCONF (National Centre for Organic and Natural Farming). *Jaivik Kheti Sahayak Pustika.* nconf.dac.gov.in.
17. ICAR (2015). *Base Paper on Organic Farming.* Indian Council of Agricultural Research, New Delhi.
18. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare. *Operational Guidelines: Paramparagat Krishi Vikas Yojana (PKVY).* Government of India.
19. Saini, S.K. & Pandey, Sunita (2001). "Organic farming: Development and strategies in Indian Perspective." *Indian Journal of Agronomy.*

20. Avi, A. & Batra, P. (2023). "Organic Farming in India: Evolution, Current Status and Policy Perspectives." *Space and Culture, India.*
21. Reganold, J.P. & Wachter, J.M. (2016). "Organic agriculture in the twenty-first century." *Nature Plants.*
22. Jaivik Kheti Portal: www.jaivikkheti.in (भारत सरकार का आधिकारिक ई-कॉमर्स और सूचना पोर्टल)।
23. Vikaspedia: www.vikaspedia.in (जैविक खेती की तकनीकों पर विस्तृत ज्ञानकोश)।
24. FAO (Food and Agriculture Organization): www.fao.org/organicag (अंतरराष्ट्रीय जैविक खेती मानक)